उड़ूंगा बन कर विमान
आसमान में।
अग्निबाण बन कर
पार कर अन्तरिक्ष
खोज सकता हूं मैं
अतल आकाश में
दूर के अदृश्य नक्षत्रों को।

नील नभ देख कर
सदा ही विह्वल होगा
हृदय आनन्द से।
जीवित हूं, जीवित रहूंगा मैं।
कितना आनन्द है इसी एक ज्ञान में।

मेरी इस आस्था से
एक कण भी तुम बटोरना जो चाहोगे,
तड़पूंगा रोष से
जैसे तड़पता है
घायल हो व्याघ्र कोई।

क्या होगा मेरा अस्तित्व तब ?
शून्य होगा मन
उस आस्था की चोरी से।
सीधी सी बात है;
रीता हो जायगा
आस्था के बिना अस्तित्व ही।